

## फलित ज्योतिष में गोचर फलित का महत्व

जन्म के समय के बाद राशि चक्र के ग्रहों की स्थिति को गोचर कहा जाता है। गो शब्द संस्कृत भाषा के "गम्" धातु से लिया गया है। गम का अर्थ है 'चलने वाला' आकाश में कई तारे हैं। वे सभी स्थिर हैं। तारों से ग्रहों के अलग होने के कारण ग्रहों का नाम गो रखा गया है। चर का अर्थ है 'चलना' अर्थात् अस्थिर परिवर्तन, इसलिए गोचर का अर्थ है ग्रहों की गति, अर्थात् ग्रहों का बदलता प्रभाव। जन्म कुंडली में ग्रहों का स्थिर प्रभाव होता है और ग्रहों में गोचर उस समय से परिवर्तित प्रभाव दिखाता है। ज्योतिष में तीन प्रकार के लग्न हैं- जन लग्न, चंद्र लग्न और सूर्य लग्न।

## दशा और अंतर दशा के समय

मन्त्रेश्वर ने फाल्दीपिका में चंद्र लग्न से गोचर पर विचार करने का भी निर्देश दिया है। सभी प्रकार के लग्न (लग्न, सूर्य लग्न और चंद्र लग्न) के बावजूद, पारलौकिक विचारों में गोचर चंद्र लग्न का है। बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में, चन्द्रमा और आरोही दोनों को महत्वपूर्ण माना गया है और दोनों ही तपस्वियों के साथ फलादेश करने का आदेश दिया गया है। आरोही लग्न सिद्धांत के अनुसार, यह पाया गया है कि चंद्रमा जन्म लग्न में उसी भाव में गोचर करता है जिसमें गर्भाधान के समय होता है। इसलिए, चंद्र का महत्व।

दशा और अंतर दशा के समय, दशा नाथ जिस राशि में बैठा है, उसे आरोही माना जाता है और दशा की अच्छाई के बारे में सोचा जाता है।

## शुभ और अशुभ फल

ट्रांजिट ओक्टेव क्लास सिस्टम का एक हिस्सा है। सप्तक अष्टक और सात ग्रहों से बना है। सप्तक में, यह देखा जाता है कि ग्रह कहाँ अच्छे परिणाम दे सकते हैं। यहां शुभ और अशुभ फल ग्रहों की परस्पर स्थिति, मित्रता और प्राकृतिक शुभता और अशुभता का ध्यान रखा जाता है। यह देखा जाता है कि कौन सा ग्रह चंद्रमा से शुभ है और कौन सा ग्रह अशुभ है। इसलिए, महर्षि ने चंद्र को चुना, जो एक ग्रह होने के अलावा एक ग्रह है, और लग्न को भी नियंत्रित करता है।

स्थिति का क्रम भी चंद्रमा के नक्षत्र के स्वामी से शुरू होता है, अर्थात् जीवन की शुरुआत भी चंद्रमा से होती है। चंद्रमा जातक की शैशवावस्था का कारक है। इसीलिए चन्द्र की कुंडली में

स्थिति बालिशत में महत्वपूर्ण है। गण्ड आदि को चंद्रमा से ही देखा जाता है। चंद्रमा से ही तिथि का महत्व है। तिथि का निर्माण चंद्रमा से होता है। दिन का नक्षत्र भी चंद्रमा से ही देखा जाता है। जिस नक्षत्र में चंद्रमा होता है, वही नक्षत्र दिन का भी होता है। इस प्रकार हम पाते हैं कि वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा का बहुत महत्व है।

तीर्थ, नक्षत्र मुहूर्त, दशा आदि सभी कल्प के चंद्रमा से देखे जाते हैं। इसलिए गोचर में चंद्रमा का महत्व बढ़ जाता है। इसलिए, महर्षि ने चंद्रमा से गोचर के विचार का आदेश दिया।

## क्या केवल गोचर फलित से परिणाम कहा जा सकता है?

दृश्यमान परिणामों का एक प्रभावी हिस्सा होने के बावजूद, यह सब नहीं है। हमारे महर्षियों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जो कोई भी कुंडली में नहीं है, वह संक्रमण नहीं दे सकता है। ग्रह गोचर में कितना भी अच्छा योग बना लें, यदि वह कुंडली में नहीं है, तो वह गोचर नहीं कर सकता है।

उदाहरण के लिए, गोचर तो दशा व अन्तर दशा के अधीन भी कार्य करता है। यदि दशा और अंतर दशा ऐसे ग्रहों में चल रही हो जो जातक के लिए अशुभ हों, लेकिन गोचर शुभ हो, तो जातक को शुभ फल नहीं मिलेंगे। क्योंकि गोचर में यह देखा जाता है कि जन्म कुंडली के ग्रहों की स्थिति से वर्तमान गोचर कुंडली में ग्रहों की स्थिति कितनी अच्छी या बुरी है। जन्म कुंडली में जो ग्रह सबसे अच्छे स्थान पर है वह गोचर में शुभ स्थान पर आते ही शुभ फल देगा। जो ग्रह कुंडली में अशुभ है, वह गोचर में शुभ होने पर भी शुभ फल नहीं देगा। जन्म के ग्रहों के साथ आंशिक या आसन्न योग करने पर गोचर ग्रह अपने सटीक फल प्रकट करते हैं। मान लीजिए कि वृषभ राशि में शुक्र 18 डिग्री पर है। जब गोचर में शुक्र 18 डिग्री तक योग को स्थानांतरित करता है, तो शुक्र का केवल अच्छा या बुरा फल दिखाई देगा। इस तरह से गोचर ग्रह जन्म के ग्रह के अधीन हो गया। यदि गोचर में ग्रह अशुभ हो, कुंडली में ग्रह उच्च का हो, स्वाभिमान हो, तो गोचर में ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

वास्तव में, गोचर के नियमों के आधार पर, हम कह सकते हैं कि गोचर का परिणाम जन्म कुंडली के ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है। यदि हम गोचर के अन्य नियमों का अध्ययन करते हैं, तो हम पाएंगे कि गोचर भी स्थिति और अंतर स्थिति के अधीन है। मूल रूप से क्षणिका विचार कुंडली और गोचर कुंडली दोनों पर निर्भर है। गोचर पर विचार करते समय, ग्रहों की स्थिति को सूर्य, चंद्रमा और लग्न के साथ माना जाना चाहिए। अगर वह